International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 4; July 2018; Page No. 74-76

आदिवासी लोक साहित्य का समान्य लोक कथाओं में सामाजिक एवं सांस्कृतिक सन्दर्भ का अध्ययन

डॉ0 सुनीता सिंह मरकाम
पी–एच.डी. (हिन्दी) – अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
आदिवासी लोकसाहित्य समाज का एक ऐसा दर्पण है जिसमें आदिम संस्कृति रीति–रिवाज एवं संस्कार के प्रतिबिम्ब दिखाई देते है। लोक साहित्य ऐसा मिश्रित साहित्य है जिसका सृजन विभिन्न सामाजिक संस्कृतियों के समागम से हुआ है आज के युग में भी जो सादगी सदाचार एवं निर्मलता यहाँ के लोक साहित्य में उपलब्ध है वह अन्यत्र शिष्ट साहित्य में दुलर्भ है यहाँ जि समाज का चित्रण हुआ है वह स्वस्थ्य सदाचारी भोली एवं धर्म भीरू है।
जनजातीय लोक साहित्य में जो अभिव्यक्ति उनके जीवन और जीवन प्रक्रिया गरीबी–भूख और विवशता से जुड़ी हुई है, वह भी सभ्य एवं शिष्ट कहे जाने वाले समाज के लिए उनकी ओर मुखातिब होंने और जनजातीय समाज के प्रति संवेदनात्मक भाव अपने के लिए प्रेरित और आकर्षित करती है। जनजातीय लोकगीतों में जो स्वाभाविक निश्छलता निराभिमानता और प्रकृति से जूझने तथा साहसपूर्ण जीवन जीने की उत्कट अभिलाषाएँ एवं उत्साह दिखाई पड़ते हैं वह भी अन्य भारतीय समाजों के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन के उत्तम उदाहरण है। साहित्य का लिखित रूप न होंने के बावजूद भी ये अपनी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को कंठ और नृत्य के माध्यम से साथ ही गाथा रंगमंच और रंगकर्म के माध्यम से संजोये हुए है यह अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है।

मूल शब्द : आदिवासी, लोक कथा, सामाजिक, सांस्कृतिक।

प्रस्तावना
लोककथा दो शब्दों से मिलकर बना है लोक एवं कथा। लोक का आशय निवास करते लोगों से है और कथा का तात्पर्य लोगों के द्वारा कही हुई कहानी से है। आदिवासी इस भू–भाग के आदिम जाति है, अतः लोककथा की शुरूआत इन्हीं से मानना चाहिए। यही वजह है कि जो भी लोक कथाएँ आज प्रचलित हैं वे बहुत पुरानी हैं और आज भी जनजातियों के समूह में ये कथाएँ अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक महत्ता को कायम किये हुए गतिमान हैं।[1]
लोक कथाओं में लोक मानस की सहज अभिव्यक्ति होती है। आदिवासी समूह के जो भी इच्छाएँ, अनुभव, संस्कार, भेद, स्तर, इतिहास, धार्मिकता, प्रेम आदि इन लोककथाओं में प्रचु मात्रा में वर्णित होते हैं। इस प्रकार आदिवासियों के जनजीवन में लोककथाओं का प्रचलन आदिकाल से देखा जा सकता है। जो भी लोक कथाएँ प्रयुक्त हो रहीं हैं उनकी समाज में मान्यताएँ हैं और रीति–रिवाज का रूप ग्रहण कर आदिवासियों को सम्बल प्रदान करती हैं। लोक कथाओं में जीवन चरित्र की स्पष्ट झाँकी झलकती है। लोक जीवन की विविध भावनाओं को अपने अस्तित्व में छिपाये हुए लोक कथाएँ आदिकाल से ही मानव के विश्राम क्षणों को सुखमय बनाती रही हैं। पहले की भाँति आज का इन्सान अपनी थकान को मिटाने के लिए मुरझाये हुए चेहरे को फूल की तरह सुन्दर बनाने के लिए रोते हुए बालकों को हँसने के लिए एवं लम्बी–लम्बी यात्राओं की नीरसता को रसवती बनाने के लिए लोक कथाओं का सहारा लेता रहा है। यही वजह है कि आज भी लोक–कथाओं का मूल्य समाज में उतना ही है जितना कि पहले था। लोक–कथाएँ सामाजिक और सांस्कृतिक संपर्क के तौर पर प्रस्तुत किये जा रहे हैं।
इस भू–भाग में आदिवासी आदिकाल से निवास कर रहे हैं और इस भू–भाग का राजा आदिवासी ही हुआ करते थे। राजा अपने पड़ोसी राज्यों से युद्ध किया करते थे। युद्ध कौशल चित्र से लोककथा में देखा जा सकता है।
बहुत दिनों पहले की बात है। बस्तर में कई छोटे–बड़े राज्य थे। किबई बालेंगा के आगे चौड़ग नामक प्रदेश में एक गोंड़ राजा राज्य करता था। इस ओर पाला नामक राज्य था, जिसका राजा एक पनका था। गोंड़ राजा का नाम था– टौडेगुन्से। टौडेगुन्से की रानी बड़ी रूपवती थी। दूर–दूर तक उसके जैसी सुन्दर स्त्री और कोई नहीं थी। होते–होते देखिए पाला राज्य के पनका राजा से टौडेगुन्से की रानी का प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो गया। पनका राजा भी दिखने में बड़ा ही खूबसूरत था।
एक बार की बात है। राजा टौडेगुन्से अपने राज्य की अन्तिम सीमा पर कहीं शिकार खेलने गया था। यही अच्छा अवसर है, ऐसा सोचकर, टौडेगुन्से की रानी ने पनका राजा के पास खबर भेजी कि तुम आकर मुझे लिवा ले जाओ। ऐसी खबर पाकर राजा तुरन्त रानी के पास महल में आ पहुंचा। बात की बात में दोनों पाला राज्य की ओर भाग चले। इधर ठीक उसी समय राजा टौडेगुन्से शिकार खेलकर लौटा। महल के सेवकों ने उसे बताया कि रानी को पनका राजा उठाकर ले गया है। तब गुस्से में भरकर राजा सैनिकों को साथ लेकर पाला राज्य की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक मेंढ़क था वह पनका राजा का गुप्तचर था। उसने देखा कि राजा टौडेगुन्से अपनी विशाल सेना के साथ पनका राजा को मारने के लिए जा रहा है। वह मेढ़क इसकी सूचना पनका राजा को देने के लिए उछलता–कूदता जाने लगा। तभी राजा की नजर उस मेढ़क पर पड़ी। वह उसे पहचान गया और बोला– अरे मेढ़क तू अपने अधर्मी राजा की सहायता करने चला है। देख, तेरे विधर्मी राजा ने मेरी स्त्री चुरा ली और तू उसी पापी की सहायता करने जा रहा है। ठहर, तुझे अभी मजा चखाता हूँ। यह कहते हुए उसने उस मेढ़क को तीर से मार डाला। मेढ़क वहीं मर गया और उसका शरीर

पत्थर में बदल गया।[2]

मेढ़क को मारकर टौडेगुन्से पाला राज्य की राजधानी पाला नगर की ओर बढ़ा। यही पनका राजा का विशाल महल था। महल में पहुंचने की सूचा ऐन–केन पनका राजा को मिली। इस समय पनका राजा की रानी और टौडेगुन्से की रानी दोनों मिलकर पनका राजा को को नहला रही थी। टौडेगुन्से की पदचाप सुनकर दोनों रानियाँ भयभीत होकर तलघर में जा छुपी और भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया। इधर राजा टौडेगुन्से ने मारे क्रोध के पनका राजा का वध कर दिया। पनका राजा की तत्काल मृत्यु हो गई और उसका शरीर वही पत्थर में परिवर्तित हो गया। राजा टौडेगुन्से ने तलघर का किवाड़ खोलने की पूरी कोशिश की वह थकहार गया किन्तु किवाड़ न खुला। राजा टौडेगुन्से अपना सा मुंह लेकर अपने राज्य वापस गया।[3]

पनिका राजा की पत्थर में परिवर्तित मूर्ति पाला नामक गाँव के जंगल के भीतर एक गुफानुमा स्थान पर आज भी है यहाँ धारणा है कि इस मूर्ति के चूर्ण के प्रभाव से कोई भी व्यक्ति अपनी पसंदीदा लड़की या लड़के को पाने में सफल हो सकता है। इसी धारणा के चलते इस मूर्ति को लोग खुरच–खुरच कर इसका चूर्ण ले जाते हैं खुरचने के मूर्ति का स्वरूप विकृत हो गया है।.... ऐसे रूप को यहाँ किडंग–मोंडग होना कहते हैं अतः इसी रूप के कारण इस मूर्ति का नाम किडंगो–मोंडगो हो गया है।

दूसरी लोककथा में भी पड़ोसी राज्यों से युद्ध किया करते थे। और भगौरिया परम्परा का चित्रण किया गया है।

झाबुआंचल के एक गाँव भगोर में पहले लबाना जाति का राजा था। वहाँ के जागीरदार अपने यहाँ पैदा होने वाले तरबूज आस–पास के रजवाड़ों में भेंट स्वरूप भेजा करते थे। एक बार किसी पड़ोसी रजवाड़े के जमींदार ने उससे अधिक तरबूजों की मांग की। जबरन की इस मांग से आहत भगोर के जागीरदार ने कुछ तरबूजों में से गूदा निकालकर उसमें मिट्टी भरवाकर उस पड़ोसी रजवाड़े में भिजवा दिये। जब उस राजा ने उन तरबूजों को देखा तो बहुत नाराज हुआ उसके कूटनीतिज्ञ मांत्री ने कहा महाराज भगोर की मिट्टी स्वयं चलकर आप तक आई है, इसका संकेत समझिए राजा ने मंत्री का आशय समझकर भगोर पर चढ़ाई कर दी और उसे जीत लिया। इस विजय से राजा इतना प्रसन्न हुआ कि उसने सैनिकों को आदेश दिया कि उन्हें जो भी युवती पसन्द हो उसे भगा लाए। राजा की आज्ञा होते ही सैनिकों ने आस–पास के गाँवों में लूटपाट की और सुन्दर युवतियों को भगा लाए। इस विजय को चिरस्थायी बनाने के लिए उस राजा ने हाट–बाजारों में नाच–गाने के उत्सव मनाने के आदेश दिये। यही परम्परा आगे चलकर भगोरिया नाम से विख्यात हुई।

संस्कार की यदि बात की जाय तो आदिवासियों में भी कई प्रकार के संस्कारों का वर्णन मिलते हैं जैसे–नामकरण संस्कार, मुण्डन, अन्नप्रासन तथा विवाह आदि। ऐसे लोककथा प्रचुर मात्रा में देखें जा सकते हैं कुछ लोककथा दृष्टान्त स्वरूप प्रस्तुत है–

जब धरती और आकाश का विवाह होने जा रहा था तब सब देवता एकत्र हुए किन्तु देवताओं ने देखा कि दूल्हें की सवारी के लिए कुछ नहीं है। भीमसेन इस कार्य के लिए भेजे गये। पम्पापुर के अहिवान दानव के पास कबूतरी नामक घोड़ी थी। उसके बछड़े का नाम जैतकरन था भीमसेन ने जैतकरन को चुराया और देवताओं ने उसके प्रत्येक केश में कीमती पत्थर बाँध दिए। यह सब हो जाने पर भीमसेन ने सोचा कि यदि विवाह करके धरती और आकाश एक हो जायेंगे तो मनुष्य कैसे जीवित रहेगा। उसने अपनी छाती से थोड़ा मैल निकाला और उसने एक कौआ बनाया, व्याह की संध्या में कौआ आकर कहने लगा कि कलियुग प्रारम्भ हो गया। देवताओं ने कहा कि अब व्याह सम्भव नहीं है। वे सब उठकर चले गये और विवाह स्थगित हो गया।[4]

लोककथाओं में आदिवासियों के धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन मिलता है। लोककथाओं में वर्णन के आधर पर यह कहा जा सकता है कि आदिवासियों के आदिदेव, बड़ादेव है प्रमुखता यह वर्ण बड़ादेव का ही उपासना करता है इन मिथक कथाओं में बड़ादेव की पूजा अनुष्ठान का दृश्य देखा जा सकता है।[5]

सृष्टि के आरम्भ की बात है लिंगों देवता और उनके भाइयों ने पृथ्वी पर जंगल, पहाड़, नदियों इत्यादि की रचना कर ली थी। तभी एक दिन पृथ्वी ने अपनी पीड़ा व्यक्त की –''सब तो हो गया पर मेरी सेवा पूजा के लिए तो कोई है ही नहीं। पृथ्वी का दुःख लिंगो देवता से नहीं देखा गया। उन्होंने पृथ्वी को आश्वासन दिया तुम चिन्ता मत करो हम तुम्हारी सेवा पूजा के लिए कोई पुजारी खोजेगें। लिंगो और उनके भाई इसी खोज में निकले। उन्हें दो मनुष्य मिले वे राजा नेताम और राजा मरकाम के नाम से जाने गये। वे सब चलते–चलते एक बहुत बड़ी नदी के किनारे पहुँचे। नदी किनारे देवताओं ने विचार किया कि हम लोग तो देवता होंने के कारण सहज ही नदी पार कर सकते हैं, लेकिन ये दानों मनुष्य हैं, ये कैसे नदी जीतेगें? नदी किनारे जंगल में ऊँची–ऊँची हाथी बराबर घास फैली थी। लिंगो और उसके भाइयों ने मिलकर इसी घास की एक रस्सी बनायी और उस रस्सी की मदद से नदी पार करने लगे। देवताओं के नदी पार कर लेने के बाद राजा मरकाम और राजा नेताम रस्सी पकड़कर नदी में उतरे, जब वे दोंनों बीच नदी में पहुँचे तो देवताओं में से किसी ने ईर्ष्यावश रस्सी काट दी, जिसके कारण वे दोनों डूबते–डूबते रोने लगे। उनके रोने की आवाज सुनकर जलचरों की रानी मछली ने एक कछुए को आदेश दिया कि जाकर उन दोनों की रक्षा करो। कछुए ने उन दोनों को अपनी पीठ पर बिठाकर नदी पार करा दी। तभी से कृतज्ञतावश मरकाम और नेताम कछुए की पूजा करने लगे। आखिर में वे सब अपने गंतव्य स्थल पर पहुँच गये। उनके विचार में यही स्थान पृथ्वी का मध्य केन्द्र बिन्दु और उपासना स्थल था। वहाँ पहुँच कर राजा मरकाम और राजा नेताम ने पृथ्वी की धरती माता के रूप में पूजते हुए काला बछड़ा भेंटकर प्रसन्न किया। इस प्रकार वे दोनों ही पृथ्वी के पहले उपासक पुजारी बने।[6]

गोंड़ सात भाई थे। उन्होंने खेत में सन बोया। कुछ दिनों के बाद सन उग आया था। एक दिन क्या देखते हैं कि खूबसूरत जवान सफेद घोड़े पर सवार उनेक खेत के बीच में घोड़ा दौड़ता आ रहा है। घोड़े की टापो से सन कुचला जा रहा है वे सब अपनी–अपनी पैथारी लेकर उस घुड़वार को मारने के लिए दौड़े। उनमें से छोटे भाई को डर के मारे हालत खराब हो गई वह डर से नाले में चला गया। छह भाइयों ने घुड़सवार का पीछा किया। खेत बहुत बड़ा था। घुड़सवार उसकी मेड़ में एक साल के वृक्ष तले गया और घोड़े समेत उसमें समा गया।

गोंड़ों ने उसे विलीन होते देखा लिया वे समझ गये कि यह मामूली घुड़सवार नहीं है जैसा कि हमने इसे समझा था। यह तो हमारा बड़ादेव है जो सफेद घोड़े पर सवार होकर हमारे खेत में निकला। हमें साक्षात दर्शन दिए और हम अभागे उन्हें पहचान नहीं पाये। उल्टा उन्हें मारने के लिए दौड़े। अब वह हमसे रूठ गया है। साल झाड़ में विलीन हो गया उसे कैसे मनाएँ? सबने सलाह की, उन्होंने साल वृक्ष के नीचे मिट्टी का चबूतरा बनाया। रार का होम दिया। सफेद मुर्गे की बलि दी। शराब का तर्पण किया। हाँथ जोड़कर विनती की खूब गिड़गिड़ाये। अपने किये की क्षमा मांगी फिर से दर्शन देने की याचना की, परन्तु बड़ा देव तो रूष्ट हो गया था। वह साल के वृक्ष से बाहर नहीं आया। छहो भाई हैरान थे कि क्या

करें? किसी तरह से बड़े देव को प्रसन्न करें। इसी समय छोटा भाई नाले की ओर से बहा आया उसने सारा हाल जाना। उसने भाइयों को धीरज बंधाया और बोला– मैं एक उपाय करता हूँ, शायद बड़ादेव प्रसन्न हो जाये।

पास के जंगल से वह खिरसारी वृक्ष की एक डाल काट लाया उसकी लकड़ी से एक तार का बाजा बनाया और उसे बजाकर गाने लगा। गीत सुनकर बड़ादेव प्रसन्न हुआ और साल वृक्ष के तने से प्रकट हुआ। उसने छोटे भाई के सिर पर हाँथ रखकर आर्शीवाद दिया तुम जब भी बाजा बजाकर मेरा गीत गाओगे मैं प्रकट हो जाउँगा, तुम्हारा यह बाजा बाना नाम से पुकारा जायेगा। बड़े देव ने सबकी पूजा स्वीकार की और उसी साल वृक्ष में विलीन हो गया। तभी से साल वृक्ष गोंड़ों का पूज्यनीय वृक्ष है।[7]

छहो भाइयों ने अपने छोटे भाई की बड़ी प्रशंसा की और कहा भाई आज से तुम घर का कोई काम नहीं करोगे तुम बाजा बजाकर बड़े देव का यश गाया करोगे। हम तुम्हारा हिस्सा बराबर दिया करेगे। हमारी कमाई मे से तुम्हारा आधा हक रहेगा। हमारी संतान भी इसी नियम का सदैव पालन करेगी। तब से छोटा भाई गीत गाने लगा और गोंड़ भाइयों से दान के रूप में आधा हक मिलने लगा।

लोक कथाओं में आदिवासियों के पर्वों का दृश्य बहुतायत मात्रा में देखे जा सकते है जैसे दीवाली, दशहरा, होली, रामनवमी, आदि। इस लोक कथा में होली नामक त्योहार का अवलोकन किया गया है।

कोरकू अपने आदिम उल्लास के साथ होली मनाते हैं। फाल्गुन पूर्णिमा को बड़ी होली और चैत पड़वा को छोटी होली मनाने के सम्बन्ध में मिथ कथा इस प्रकार है होलिका एक ब्राह्मण की कन्या थी। वह एक आदिवासी युवक से प्रेम करती थी। उन दोनों में आसीम प्रेम था इसलिए दोनों ने विवाह करने की कसम खायी, किन्तु सामाजिक और जातीय नियमानुसार उन्हें विवाह करने की अनुमति नहीं दी गई। अन्ततः होलिका का विवाह एक ब्राह्मण युवक से तय किया गया। यह खबर मिलते ही आदिवासी युवक ने आत्महत्या कर लिया तो यह समाचार जब होलिका को मिला तो वह चिता सजाकर भस्म हो गई। सम्भव है बड़ी जातियों द्वारा जनजातियों को हीन समझने और वर्ग–संघर्ष की प्रतिक्रिया स्वरूप यह कथा बनी हो, लेकिन कोरकू जनजाति में होली इसी कथा के नायक व नायिका के अमर–प्रेम को चिरजीवी रखने के उद्देश्य से मनायी जाती है।

होली स्थल पर गूलर, टेमरू या अस्तरा वृक्ष की साखा रोपित करते है जिसे होली का डाण्डा या भोभई कहते है। इस सम्बन्ध में मिथ कथा है कि एक समय कोरकू पूर्वज शिकार खेलने जंगल गये। जोरो की बारिश से बचने के लिए एक पूर्वज ने गूलर वृक्ष, दूसरे ने टेमरू और तीसरे ने अस्तरा वृक्ष की शरण ली। एक पूर्वज ने देखा कि एक बाघ उसी की ओर चला आ रहा है। गूलर वृक्ष के नीचे सर्प का बिल था। उसमें से सर्प निकला और बाघ की ओर झपटा सर्प के आक्रमण से बाघ घबरा कर जंगल में चला गया। पूर्वज ने अपने साथ घटित इस घटना की जानकारी सभी को बतलाई। अन्य पूर्वजों ने माना कि गूलर, टेमरू या अस्तरा वृक्ष की साखा रोपित की जाती है सर्प के प्रतीक रूप में जंगली घास होली स्थल पर रखते हैं और पूजन करते हैं।[8]

इसी प्रकार आदिवासियों में कई तरह के लोक परम्पराओं का प्रचलन आज भी विद्यमान हो, जो लोककथाओं में सहज रूप से देखे जा सकते हैं। खेती करने की परम्परा, जातिगत परम्परा, भगौरिया परम्परा बलि देने की परम्परा जैसे– अनेकानेक परम्पराएँ प्रथा का रूप धारण कर ली है वानिकी के रूप में कुछ प्रस्तुत है–

पहले पहल धरती नहीं थी। चारो तरफ जल ही जल था। एक दिन ब्रह्मा ने जल में धरती बनाई उसी समय धरती फोड़कर दो साधु निकले। पहला ब्राह्मण और दूसरा साधू नंगा बैगा था। ब्रह्मा ने ब्राह्मण को पढ़ने लिखने के लिए कागज कलम थमा दिया और नंगा बैगा को टंगिया दे दिया। ब्रह्मा ने नंगा बैगा को कोदो–कुटकी देकर खेती करने का आदेश दिया। तब से बैगा जंगल काटकर खेती कर रहे हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि आज भी लोककथा आदिवासियों के जन जीवन में अपनी छटा लिए हुए इनके सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों को समेटे हुए गरिमा प्रदान कर रही है लोककथा इनके मनोरंजन के साधन भर न होकर कई प्रकार के नीतिगत उपदेशों का भी समुच्चय रही है यही बजय है कि चाहे बच्चे हो, बूढ़े हो या नवयुवक सभी को लोककथा अपनी कौतूहलपन के कारण प्रिय प्रतीत होती रही है भविष्य में भी ये लोक कथाएँ समाज को योग प्रदान करते रहेंगे इसमें कोई संदेह नहीं है।[9]

आदिवासी समाज में आदिवासियों की एक विशिष्ट शब्दावली होती है उनकी भाषा, बोली, रीति–रिवाज, संस्कृति, रहन–सहन, खान–पान, गीत–गाने आदि ये सब सभ्य समाज से हटकर होता है इसलिए इनकी अलग पहचान होती है।

आदिवासी लोक साहित्य बिना किसी आर्चायत्व के विकसित हुआ है नैसर्गिक रूप में कोई काव्यशास्त्रीय परम्परा नहीं है किन्तु सांस्कृतिक परम्परा अवश्य है आदिवासी लोकसाहित्य का जन्म ग्रामीण परिवेश में होता है लोक अंचल का यह साहित्य अपने आप बन जाता है या कोई बनाता है यह एक कौतूहल का प्रश्न है लोक कथाएँ, लोकोक्तियों और लोक पहेलिया पीढ़ी दर पीढ़ी न जाने कब से चली आ रही है लिखित साहित्य सभ्यता और संस्कृति के नये लिबास में कुछ नया–नया सा है जबकि अलिखित साहित्य अपनी नैसर्गिक छटा और सुषमा बिखेर रहा है वही कृत्रिमता नहीं, सब कुछ प्रत्यक्ष है सहज एवं सच्चा है।

सन्दर्भ

1. चौमासा – मार्च–जून 2003 डॉ0 कपिल तिवारी, आदिवसी लोककला अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल
2. शादाब अहमद सिद्दीकी – मध्यप्रदेश सम्पूर्ण अध्ययन, उपकार प्रकाशन आगरा–2
3. आदिवासी लोककथाएँ–गोंडी पब्लिक ट्रस्ट मण्डल (म0प्र0)
4. आदिवर्त, खजुराहो, आदिवासी लोककला अकादमी भोपाल
5. गोंडवाना दर्शन, रजत महोत्सव, गोंडवाना गोंडी साहित्य परिषद, राजनादगांव (छ.ग.)
6. आदिवासी संग्रहालय, आदिम जाति अनुसंधान एवं विकास संस्थान
7. आत्माराम कुमरे – गोंडियन मुक्ति ग्रंथ, आदर्श प्रिंट छिन्दवाड़ा
8. गोंडवाना दर्शन रजत महोत्सव
9. गोंडवाना दर्शन रजत महोत्सव